झारखण्ड
राय विश्वविद्यालय
राँची

कौटिल्य
ज्ञान केंद्र

खण्ड-II | अंक -01 | 2026

संवित्

अर्धवार्षिक पत्रिका

इस अंक में :

- कौटिल्य ज्ञान केन्द्र : एक शोध संस्थान ...– 5
- विगत गतिविधियां – 6
- छात्र प्रतिनिधि कार्यशाला – 8
- हमारे उभरते लेखक... – 9
- युवा दृष्टि – 10
- सामाजिक सहभागिता – 12

झारखण्ड राय विश्वविद्यालय
राजा उलातू, नामकुम, राँची, झारखण्ड, पिनकोड - 834010

संपादकीय मंडल

–: संरक्षक :–

प्रो. (डॉ.) सविता सेंगर

कुलाधिपति, झारखंड राय विश्वविद्यालय, रांची

प्रधान संपादक

प्रो. (डॉ.) पीयूष रंजन

कुलपति, झारखंड राय विश्वविद्यालय, रांची

मार्गदर्शक

प्रो. (डॉ.) बी. के. सिन्हा

कुलाधिपति सलाहकार, झारखंड राय विश्वविद्यालय, रांची

संपादक

डॉ. कुमार अमरेंद्र

समन्वयक, कौटिल्य ज्ञान केंद्र, झारखंड राय विश्वविद्यालय, रांची

सह–संपादक

राहुल सिंह

समन्वयक, कौटिल्य ज्ञान केंद्र, झारखंड राय विश्वविद्यालय, रांची

डिजाइन एवं प्रस्तुति

शैलेश कुमार

कौटिल्य ज्ञान केंद्र, झारखंड राय विश्वविद्यालय, रांची

प्रकाशक

झारखंड राय विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड द्वारा **जनवरी–2026 / माघ, कृष्ण पक्ष–2082 (विक्रम संवत)** में प्रकाशित।

कॉपीराइट

©2026 झारखंड राय विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड

सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस पुस्तिका के समस्त लेख, सामग्री, चित्र, आँकड़े एवं प्रस्तुति झारखंड राय विश्वविद्यालय की बौद्धिक संपदा हैं। विश्वविद्यालय की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन, अनुवाद, संग्रहण अथवा किसी भी माध्यम में उपयोग निषिद्ध है। शैक्षणिक एवं संदर्भ उपयोग हेतु सीमित उद्धरण की अनुमति, स्रोत का उचित उल्लेख करते हुए, दी जा सकती है।

संपादकीय

परंपरा, ज्ञान और नवचेतना

भारतीय ज्ञान प्रणाली का समकालीन संदर्भ

तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा की भूमिका निरंतर विस्तृत हो रही है। आज शिक्षा से अपेक्षा केवल व्यावसायिक दक्षता तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह मानवीय मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक चेतना के निर्माण का माध्यम बन चुकी है। ऐसे समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जहाँ ज्ञान को जीवन, समाज और प्रकृति के साथ समन्वय में देखा गया है। यह प्रणाली हमें सिखाती है कि सच्चा विकास वही है, जो भौतिक प्रगति के साथ नैतिक और बौद्धिक उत्थान को भी सुनिश्चित करे।

भारतीय ज्ञान परंपरा सहस्राब्दियों के अनुभव, चिंतन और अनुसंधान से विकसित हुई है। इसमें वैदिक चिंतन की प्रकृति–केन्द्रित दृष्टि, उपनिषदों का आत्मबोध, दर्शन की तर्कशीलता, आयुर्वेद और योग की जीवन–पद्धति, गणित और खगोल की वैज्ञानिक समझ, तथा नीति और शासन से जुड़े विचारें सभी एक समग्र ज्ञान–संरचना का निर्माण करते हैं। यह परंपरा न केवल अतीत की स्मृति है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की जटिल चुनौतियों के समाधान की क्षमता भी रखती है, यही कारण है कि आज वैश्विक स्तर पर इस ज्ञानधारा के प्रति रुचि निरंतर बढ़ रही है।

इसी व्यापक दृष्टि को संस्थागत रूप देने के उद्देश्य से झारखंड राय विश्वविद्यालय निरंतर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित कौटिल्य ज्ञान केंद्र भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक अकादमिक विमर्श, शोध और नवाचार से जोड़ने का एक सशक्त मंच प्रदान करता है। यहाँ आयोजित बौद्धिक संवाद, प्रशिक्षण कार्यक्रम, शोध गतिविधियाँ और अकादमिक पहलें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को परंपरा के साथ तार्किक और रचनात्मक रूप से जुड़ने का अवसर देती हैं।

इन प्रयासों की अभिव्यक्ति के रूप में विश्वविद्यालय के **कौटिल्य ज्ञान केन्द्र** द्वारा प्रकाशित की जा रही अर्धवार्षिक पत्रिका **'संवित'** का यह **खंड-2** का प्रथम अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। यह अंक भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़े विचारों, गतिविधियों और शैक्षणिक अनुभवों को समेटते हुए एक सार्थक संवाद स्थापित करने का प्रयास करता है।

अमरेन्द्र

डॉ. कुमार अमरेन्द्र
समन्वयक, कौटिल्य ज्ञान केन्द्र
झारखण्ड राय विश्वविद्यालय, रांची

कुलाधिपति
की कलम से...

भारतीय ज्ञान परंपरा हमारी शिक्षा की आत्मा रही है, जो ज्ञान को केवल सूचना नहीं, बल्कि जीवन–दृष्टि के रूप में देखती है। वेद, उपनिषद, दर्शन, योग, आयुर्वेद, नीति और सामाजिक चिंतन, इन सभी ने मानव को प्रकृति, समाज और आत्मा के साथ संतुलन में जीने का मार्ग दिखाया है। आज के आधुनिक एवं तकनीकी युग में भी यह परंपरा हमें नैतिकता, करुणा, उत्तरदायित्व और समग्र विकास का बोध कराती है। झारखंड राय विश्वविद्यालय का कौटिल्य ज्ञान केंद्र इस समृद्ध परंपरा को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने का निरंतर प्रयास कर रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित छोटी–छोटी एवं सरल पुस्तिकाओं का प्रकाशन, कार्यशालाओं एवं सम्मेलनों का आयोजन इसकी प्रमुख गतिविधियाँ हैं। यह केंद्र विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जुड़ते हुए वैश्विक दृष्टि विकसित करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि झारखंड राय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों का समुचित संकलन संवित के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है। विश्वविद्यालय का यह प्रयास न केवल अकादमिक उत्कृष्टता को दर्शाएगा, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय मूल्यों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को भी सशक्त रूप में उजागर करेगा।

झारखंड स्थापना दिवस जैसे आयोजनों के माध्यम से राज्य की ऐतिहासिक विरासत, जननायकों के संघर्ष और सांस्कृतिक पहचान को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य सराहनीय है। वहीं रक्तदान शिविर, दान उत्सव एवं अन्य सामाजिक सेवा, विद्यार्थियों और कर्मचारियों में करुणा, सहयोग और मानव सेवा की भावना को प्रबल करती हैं।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि कार्यक्रमों का आयोजन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगें और उन्हें जिम्मेदार, संवेदनशील एवं जागरूक नागरिक बनाने में सहायक होंगे। विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर उसे जीवन–मूल्यों, संस्कृति और समाज सेवा से जोड़ना वास्तव में प्रशंसनीय है।

संवित् के इस अंक के प्रकाशन के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन, संकाय सदस्यों, आयोजक इकाइयों तथा सभी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देती हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि झारखंड राय विश्वविद्यालय भविष्य में भी इसी प्रतिबद्धता और ऊर्जा के साथ ज्ञान, संस्कृति और सेवा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करता रहेगा।

सविता सेंगर

प्रो. (डॉ.) सविता सेंगर
कुलाधिपति
झारखंड राय विश्वविद्यालय, रांची

कौटिल्य ज्ञान केन्द्र : एक शोध संस्थान के रूप में विकास की ओर

शोध केन्द्र की स्थापना : झारखंड राय विश्वविद्यालय, राँची ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली (भारतीय ज्ञान सम्पोषण गवेषण केन्द्र) के आहवान पर, क्षेत्रीय ज्ञान परंपरा पर केंद्रित अनुसंधान केंद्र की स्थापना के लिए आमंत्रित प्रकल्प हेतु प्रस्ताव प्रेषित किया है। राय विश्वविद्यालय, भारत की ज्ञान परंपराओं को संकलित कर, उन्हें आज के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक बनाकर, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में समाहित करने की योजना पर कार्य कर रहा है। इसी क्रम में कौटिल्य ज्ञान केंद्र की स्थापना की जा चुकी है। कौटिल्य ज्ञान केंद्र, भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित कार्यशालाओं और सम्मेलनों का आयोजन कर चुका है, जिनमें पंचकोश आधारित त्रिदिवसीय छात्र प्रतिनिधि कार्यशाला और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास आधारित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला प्रमुख हैं। वर्तमान में, कौटिल्य ज्ञान केंद्र भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित पुस्तक के निर्माण पर कार्य कर रहा है और एक तीन दिवसीय सम्मेलन आयोजित करने की योजना बना रहा है। इसके अतिरिक्त, कौटिल्य ज्ञान केंद्र भारत की कुछ प्रमुख पुस्तकों के हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद की भी योजना बना रहा है। राय विश्वविद्यालय स्वयं भारतीय ज्ञान परंपरा पर कार्यरत है। ऐसे में यदि विश्वविद्यालय को भारतीय ज्ञान सम्पोषण गवेषण केन्द्रम् का सहयोग प्राप्त होता है, तो कौटिल्य ज्ञान केंद्र अपने दृष्टि और उद्देश्य को और प्रभावी रूप से आगे बढ़ाने में सक्षम होगा।

इंटर्नशिप कार्यक्रम : झारखंड राय विश्वविद्यालय, राँची द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा के संवर्धन, संरक्षण एवं प्रसार के उद्देश्य से भारतीय ज्ञान संवाहन (इंटर्नशिप) कार्यक्रम के अंतर्गत सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जा रही है। यह कार्यक्रम युवाओं को भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विविध विषयों का गहन, व्यवस्थित एवं शोधपरक अध्ययन करने के लिए प्रेरित करेगा तथा भारतीय भाषाओं में अध्ययन एवं अनुसंधान को प्रोत्साहन प्रदान करता है। इस पहल के माध्यम से विद्यार्थियों को ग्रीष्मावकाश अथवा वर्ष के किसी भी समय सक्रिय अनुसंधान कार्य में सहभागी बनने का अवसर उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे वे भारतीय ज्ञान प्रणाली के संरक्षण, संवहन एवं समकालीन संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता को सुदृढ़ करने में सार्थक योगदान दे सकेंगे।

अनुसंधान प्रस्ताव : झारखंड राय विश्वविद्यालय, राँची द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) प्रभाग के अंतर्गत परिणाम आधारित अनुसंधान प्रस्ताव (Outcome Based Research Proposals) कार्यक्रम के माध्यम से अनुसंधान को प्रोत्साहित करने हेतु प्रस्ताव तैयार किए जा रहे हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उत्प्रेरक अनुदान (Catalytic Grants) प्रदान कर युवा वैज्ञानिकों को अपने अनुसंधान की शुरुआत करने में सहयोग देना तथा स्थापित वैज्ञानिकों को IKS से संबंधित नए शोध आयामों एवं पद्धतियों पर कार्य आरंभ करने के लिए प्रेरित करना है। प्रस्ताव आमंत्रण के इस चरण में सहकर्मी समीक्षा प्रक्रिया (Peer Review Process) के अधीन कुल बीस नए शोध प्रस्तावों को वित्तपोषित किए जाने की अपेक्षा है। प्रत्येक स्वीकृत शोध परियोजना को दो वर्षों की अवधि के लिए अधिकतम 25 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों ने **SWAYAM (MOOCs)** मंच के माध्यम से 'भारतीय ज्ञान परंपरा' को वैकल्पिक विषय के रूप में अध्ययन किया है। अब तक लगभग 116 विद्यार्थियों ने सफलतापूर्वक प्रमाणपत्र प्राप्त कर विश्वविद्यालय की कौशल–विकास एवं ऑनलाइन शिक्षण पहल को सशक्त बनाया है।

SWAYAM ONLINE COURSE CERTIFICATION

This certificate is awarded to

ADITYA RAJ

for successfully completing the 3 credit course

Indian Knowledge System

July - December 2025

with the consolidated score of 97%

in the proctored examination held on 11-12-2025

offered by Dr. Roli Pradhan

NATIONAL COORDINATOR
Director NITTTR, Chennai

DIRECTOR
NITTTR, Bhopal

गतिविधियां

ई–वेस्ट प्रबंधन

तकनीकी प्रगति के साथ–साथ इलेक्ट्रॉनिक कचरा आज एक गंभीर पर्यावरणीय चुनौती बन चुका है। इसी संदर्भ में झारखंड राय विश्वविद्यालय के एनएसएस क्लब द्वारा **"ई–वेस्ट प्रबंधन अभियान 2025"** का आयोजन **20 अक्टूबर से 20 नवंबर 2025** तक विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। इस अभियान का उद्देश्य ई–वेस्ट के सुरक्षित निपटान के प्रति जागरूकता फैलाना और अनुपयोगी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को जिम्मेदार तरीके से एकत्र करना था।

अभियान के अंतर्गत एनएसएस स्वयंसेवकों ने कक्षाओं, छात्रावासों, फैकल्टी कक्षों और प्रशासनिक कार्यालयों में जागरूकता सत्र आयोजित किए। पोस्टर और संवाद के माध्यम से विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को ई–वेस्ट के दुष्प्रभावों और इसके सही निस्तारण की जानकारी दी गई। विश्वविद्यालय परिसर के विभिन्न स्थानों पर संग्रहण बिन लगाए गए, जहाँ से कुल 36 इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ एकत्र की गईं।

इस पहल से विश्वविद्यालय समुदाय में ई–वेस्ट प्रबंधन को लेकर जागरूकता बढ़ी और विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। स्वयंसेवकों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी और सामाजिक सहभागिता की भावना विकसित हुई। **"ई–वेस्ट प्रबंधन अभियान 2025"** ने यह सिद्ध किया कि संगठित प्रयासों के माध्यम से स्वच्छ और सतत परिसर की दिशा में प्रभावी कदम उठाए जा सकते हैं।

छठ उत्साह एवं उत्सव 2025

विश्वविद्यालय के वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग द्वारा **16 अक्टूबर 2025** को **"छठ उत्साह एवं उत्सव २०२५"** का आयोजन किया गया। यह एक अंतर्विभागीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता थी, जिसमें लगभग 80 छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना का विकास करना, लोक परंपराओं के संरक्षण को प्रोत्साहित करना तथा छठ महापर्व से जुड़े आस्था, अनुशासन और प्रकृति–पूजन के मूल्यों को सशक्त करना था।

आयोजित प्रतियोगिताएँ –

- सूप सजावट प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने छठ पूजा की परंपरा को केंद्र में रखते हुए इको–फ्रेंडली सामग्रियों का रचनात्मक उपयोग किया। पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए प्लास्टिक एवं थर्माकोल के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबंध रखा गया।
- वहीं छठ गीत गायन प्रतियोगिता में एकल एवं समूह गायन के माध्यम से पारंपरिक लोकगीतों की मधुर प्रस्तुति दी गई, जिसने पूरे परिसर को भक्तिमय वातावरण से भर दिया।

कार्यक्रम के दौरान घाट सजावट, प्रसाद निर्माण, संध्या एवं प्रातः अर्घ्य जैसे छठ पर्व से जुड़े सांस्कृतिक पक्षों का सजीव मंचन किया गया, जिससे विद्यार्थियों में सामूहिकता और सांस्कृतिक गौरव की भावना और प्रबल हुई।

पोस्टर प्रतियोगिता

कौटिल्य ज्ञान केंद्र के तत्वावधान में **27 नवंबर 2025** को झारखंड राय विश्वविद्यालय परिसर में "पोस्टर प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय

"आधुनिक शल्य चिकित्सा विज्ञान की आधारशिला" था। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित चिकित्सा विज्ञान की वैज्ञानिक विरासत से परिचित कराना था।

प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपने पोस्टरों के माध्यम से सुश्रुत–भारतीय शल्य चिकित्सा के जनककृके योगदान को रचनात्मक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। पोस्टरों में शल्य चिकित्सा के सिद्धांतों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानव कल्याण के मूल्यों का संतुलित समन्वय देखने को मिला।

इस गतिविधि ने विद्यार्थियों में भारतीय चिकित्सा ज्ञान के प्रति सम्मान, ऐतिहासिक चेतना और रचनात्मक सोच को विकसित किया। कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं सृजनात्मक विकास में सार्थक योगदान सिद्ध हुआ।

झारखंड स्थापना दिवस

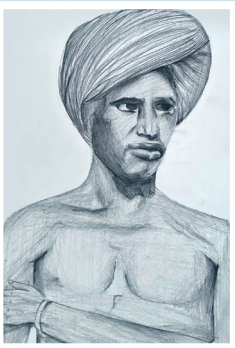

झारखंड स्थापना दिवस के अवसर पर झारखंड राय विश्वविद्यालय द्वारा 12–13 नवंबर 2025 को विश्वविद्यालय परिसर में एक विशेष कार्यक्रम श्रृंखला का आयोजन किया गया। यह आयोजन सांस्कृतिक क्लब, राष्ट्रीय सेवा योजना एवं कौटिल्य ज्ञान केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य राज्य की सांस्कृतिक विरासत, जननायकों के संघर्ष तथा झारखंड की 25 वर्षों की विकास यात्रा को स्मरण करते हुए विद्यार्थियों में ऐतिहासिक चेतना और रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना था।

कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत 12 नवंबर 2025 को आयोजित स्मारक व्याख्यान में मुख्य वक्ता प्रो. अंजनी कुमार श्रीवास्तव,

पूर्व कुलपति, बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद थे। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा के जीवन–दर्शन, झारखंड आंदोलन और राज्य के विकासात्मक आयामों पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य, जल, बिजली और परिवहन जैसे विषयों पर झारखंड के सतत विकास की आवश्यकता को रेखांकित किया। व्याख्यान विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध हुआ।

रेखाचित्र प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने भगवान बिरसा मुंडा, झारखंड का इतिहास और सांस्कृतिक पहचान को अपनी कलात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों की संवेदनशीलता, रचनात्मकता और सांस्कृतिक समझ स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई। इस आयोजन से विद्यार्थियों में झारखंड की सांस्कृतिक विरासत के प्रति रुचि बढ़ी तथा कला, अभिव्यक्ति और नेतृत्व कौशल को नया आयाम मिला। यह कार्यक्रम ज्ञान, संस्कृति और प्रेरणा का प्रभावशाली संगम सिद्ध हुआ।

छात्र प्रतिनिधि कार्यशाला

विश्वविद्यालय में **20 से 22 नवंबर 2025** तक आयोजित **छात्र प्रतिनिधि कार्यशाला** ने विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए एक प्रेरक मंच प्रदान किया। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम न केवल शिक्षा और कौशल पर केंद्रित रहा, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में चरित्र–निर्माण,

नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी की महत्वपूर्ण सीख भी प्रदान की। कार्यशाला की संरचना पंचकोश (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय) की अवधारणा पर आधारित थी, जिससे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास में संतुलन स्थापित किया जा सके।

कार्यशाला का शुभारंभ प्रेरणादायी उद्घाटन सत्र से हुआ, जिसमें शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी, एनआईटी जमशेदपुर के प्रो. (डॉ.) गौतम सूत्रधार, विश्वविद्यालय की कुलाधिपति प्रो. (डॉ.) सविता सेंगर तथा कुलपति प्रो. (डॉ.) पीयूष रंजन की गरिमामयी उपस्थिति रही। वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा केवल ज्ञान का संप्रेषण नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के नैतिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक उत्थान का आधार है।

डॉ. अतुल कोठारी ने अपने संबोधन में पंचकोश की अवधारणा को दैनिक जीवन, आत्मनिर्भरता, पर्यावरण संवर्धन एवं प्राणायाम जैसे विषयों से जोड़ते हुए उन्होंने विद्यार्थियों को संतुलित जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में अन्नमय कोश के अंतर्गत भोजन, स्वास्थ्य और जीवनशैलीय प्राणमय कोश के अंतर्गत श्वास–प्रश्वास, ऊर्जा–संतुलन और प्राणायामय मनोमय कोश के अंतर्गत भावनात्मक संतुलन, सकारात्मक सोच एवं मानसिक दृढ़ता पर व्यावहारिक चर्चाएँ एवं अभ्यास कराए गए।

दूसरे दिन विज्ञानमय कोश पर केंद्रित सत्र में कुलाधिपति प्रो. (डॉ.) सविता सेंगर ने विवेक, तर्कशीलता और नैतिक निर्णय–क्षमता के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह मूल्य–आधारित आचरण में परिवर्तित हो।

कार्यशाला का अंतिम चरण आनंदमय कोश पर आधारित रहा, जिसमें जीवन के उद्देश्य, आंतरिक संतोष और स्थायी आनंद की अवधारणा पर विचार–विमर्श किया गया। समूह चर्चाओं एवं अनुभव–विनिमय के माध्यम से प्रतिभागियों ने अपने–अपने संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं चरित्र–निर्माण आधारित गतिविधियों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। समापन सत्र में विश्वविद्यालय के अकादमिक नेतृत्व ने प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता की सराहना की।

समग्र रूप से यह कार्यशाला केवल प्रशिक्षण कार्यक्रम न होकर जीवन–दृष्टि को विस्तार देने वाली एक सार्थक पहल सिद्ध हुई। इसने यह संदेश स्पष्ट किया कि शिक्षा का अंतिम लक्ष्य केवल व्यावसायिक दक्षता नहीं, बल्कि एक सजग, संवेदनशील और मूल्यनिष्ठ समाज का निर्माण है।

हमारे उभरते लेखक...

लेख

भारतीय भाषाओं में विधि का अध्ययन और अध्यापन

हमें पढ़ना है, हम पढ़ेंगे, निश्चित उड़ान बेहतर भरेंगे।
भाषा बनेगी बुनियाद हमारी, अब आगे बढ़ने में न डरेंगे।

भारतीय भाषाओं में पुस्तकों का छपना शुरू होना निश्चित रूप से गर्व का विषय है। पर प्रश्न यह है कि इन्हें पढ़ाने वाला कौन होगा, जो इन पुस्तकों को विद्यार्थियों तक सही ढंग से पहुँचा सके। यदि ये पुस्तकें केवल विश्वविद्यालयों की लाइब्रेरी में भेंट स्वरूप रखी रह जाएँ, तो इस प्रयास का उद्देश्य ही अधूरा रह जाएगा।

विश्वविद्यालयों में लगभग 70 प्रतिशत छात्र अपने राज्य बोर्ड से बारहवीं तक की शिक्षा प्राप्त करते हैं। विश्वविद्यालय में प्रवेश करते ही उन पर विषय को समझने से अधिक भाषा का दबाव पड़ने लगता है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षणिक बुनियाद कमजोर होने लगती है। ऐसे कितने शिक्षक हैं जो यह दावा कर सकें कि वे अंग्रेजी के अतिरिक्त किसी एक भारतीय भाषा में भी वही विषय उतनी ही स्पष्टता से समझा सकते हैं– शायद पाँच प्रतिशत भी नहीं। यहाँ तक कि कई स्थानों पर हिंदी में पढ़ाना या सुनना भी पसंद नहीं किया जाता। लेकिन यदि समय के अनुसार हम स्वयं को नहीं बदलते, तो पीछे छूट जाना तय है।

बदलाव समय के साथ हो, तो वह अधिक प्रभावी होता है। वर्तमान संदर्भ में यह और भी आवश्यक है, क्योंकि भारत विश्वगुरु बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। ऐसे में शिक्षा जगत में बुनियादी बदलाव इस लक्ष्य को प्राप्त करने में देश की सहायता कर रहे हैं। आज बड़े–बड़े विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं में विधि शिक्षा को लेकर अनेक प्रयोग हो रहे हैं, जो साधनों से अधिक साधना की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं।

विधि शिक्षा केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं है, बल्कि बेहतर समाज के निर्माण में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए यह आवश्यक है कि कानून उस भाषा में लोगों तक पहुँचे, जिससे वे परिचित हों। यदि किसी छात्र में कानून पढ़ने की इच्छा है, लेकिन अंग्रेजी भाषा की पर्याप्त समझ नहीं है, तो वह कानून से दूर होता चला जाएगा। जबकि कानून समाज पर आधारित होता है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि भाषा बाधा नहीं, बल्कि सुविधा बने। जब छात्र अपनी मिट्टी की भाषा में विषय को समझता है, तो उसकी समझ अधिक गहरी होती है। कानून को जानना जितना एक न्यायाधीश के लिए आवश्यक है, उतना ही एक सामान्य नागरिक के लिए भी। आज सामाजिक जीवन में कानून की भूमिका लगातार बढ़ रही है। यह सब संभव हो रहा है उन समर्पित व्यक्तित्वों की दृढ़ इच्छाशक्ति से, जिनके सपने अब धीरे–धीरे साकार हो रहे हैं।

बदलते परिवेश में बदलना है, अब अपनी भाषा में पढ़ना है।
जो कुछ ख्वाब अधूरे रह जाते हैं, उन्हें भाषा के बल पर पूरा करना है।

प्रियाशु त्रिपाठी
विधि अध्ययन विभाग

आगामी कार्यक्रम

जनवरी, 2026	राष्ट्रीय युवा दिवस, भारतीय दर्शन, शिक्षा, युवा सशक्तिकरण एवं स्वामी विवेकानंद जयंती पर कार्यक्रम।
फरवरी, 2026	सरस्वती पूजा एवं पारंपरिक शिक्षा, कला एवं विज्ञान, गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर संवाद का आयोजन।
फरवरी, 2026	आर्यभट्ट जयंती : भारतीय गणित, मातृभाषा दिवस एवं खगोलशास्त्र भारतीय गणितीय खोजों पर छात्रों की प्रस्तुतियाँ।
मार्च, 2026	प्राचीन भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी दिवस, प्राचीन से आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान पर संगोष्ठी, होली के सामाजिक एवं वैज्ञानिक पक्ष पर सांस्कृतिक कार्यक्रम।
अप्रैल, 2026	महावीर जयंती एवं नैतिकता, अहिंसा, भारतीय दर्शन, जैन दर्शन, नैतिक नेतृत्व पर व्याख्यान एवं चाणक्य अर्थशास्त्र, शासन एवं कूटनीति नेतृत्व पर चर्चा।
मई, 2026	शंकराचार्य जयंती पर व्याख्यान।
जून, 2026	अंतरराष्ट्रीय योग दिवस– योगिक विज्ञान पर संवाद।
जून, 2026	भारतीय खगोलीय परंपराएँ एवं पंचांग पर प्रदर्शनी।

छात्र – विशेष

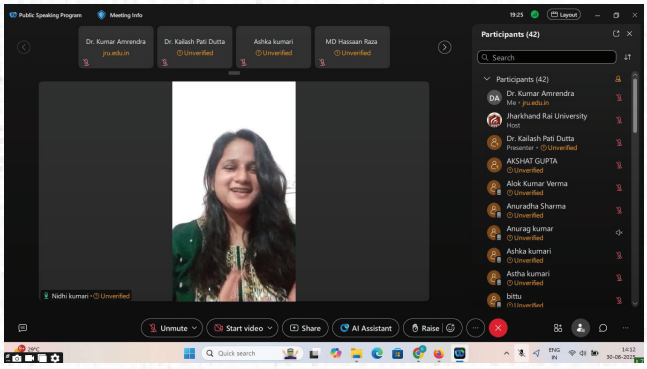

विचार श्रंखला

कौटिल्य ज्ञान केंद्र द्वारा प्रत्येक शनिवार आयोजित "विचार श्रृंखला" कार्यक्रम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण और सतत पहल के रूप में स्थापित हो रहा है। इस मंच का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा समसामयिक विषयों पर आत्मविश्वास पूर्वक, तार्किक और संतुलित ढंग से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करना है। लगभग 30 मिनट की अवधि वाले इन सत्रों में विद्यार्थी न केवल अपनी अभिव्यक्ति क्षमता को निखारते हैं, बल्कि सुनने, समझने और विचारों का आदान–प्रदान करने की कला भी सीखते हैं।

अब तक "विचार श्रृंखला" के आठ सत्रों के सफल आयोजन में विद्यार्थियों ने विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्रेरणादायी विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं, जिनमें इम्पैक्ट ऑफ सेल्फ लव, हिंदी एवं युवा पीढ़ी, जननायक भगवान बिरसा मुंडा, शक्ति स्वरूपा, गुरुवंदनम्, छठ – लोक आस्था और प्रकृति प्रेम का महापर्व, अदम्य साहस और शौर्य के प्रतीक भारतीय सशस्त्र सेना तथा अनिश्चितता को गले लगाओ जैसे विषय प्रमुख रूप से शामिल हैं। इन विषयों के माध्यम से विद्यार्थियों ने आत्म–विकास, सांस्कृतिक मूल्यों, राष्ट्रप्रेम, भाषा–संवर्धन एवं सकारात्मक जीवन–दृष्टि से जुड़े विविध पहलुओं पर अपने सारगर्भित एवं प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किए हैं।

युवा दृष्टि

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध परंपराओं में से एक है। इसकी जड़ें वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों और दर्शनशास्त्र में निहित हैं। यह परंपरा जीवन के प्रत्येक पक्ष (धर्म, कर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) का समन्वित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से ज्ञान का संरक्षण और प्रसार होता रहा है। आयुर्वेद, योग, गणित, खगोलशास्त्र, वास्तुशास्त्र और पर्यावरणीय संतुलन जैसे क्षेत्रों में भारत का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

अमन कुमार
बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि, सेमेस्टर – VI

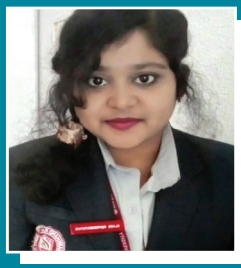

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।"

भारत में ज्ञान की परंपरा अत्यंत प्राचीन है, जिसका आरंभ वेदों से माना जाता है। भारतीय संस्कृति ने विज्ञान, गणित, खगोल, चिकित्सा और दर्शन जैसे अनेक क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया है। उपनिषदों की परंपराकृगुरु के समीप बैठकर संवाद के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना भारतीय चिंतन की विशेष पहचान रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा तर्कमूलक, मूल्यनिष्ठ और आचरण–आधारित है। यदि हम इस परंपरा को अपने जीवन में अपनाएँ, तो मानव कल्याण और राष्ट्रीय उत्थान का मार्ग स्वतः प्रशस्त हो सकता है।

नूपुर झा
बी.एस.सी. कृषि, सेमेस्टर – II

युवा दृष्टि

भारतीय ज्ञान परंपरा हमें संतुलित जीवन, नैतिक आचरण, आत्मबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व का मार्ग दिखाती है। यह परंपरा सिखाती है कि प्रत्येक व्यक्ति का एक धर्म अर्थात कर्तव्य होता है–अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति सही कर्म करना ही सच्ची सफलता है। यहाँ शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मविकास का माध्यम माना गया है। सत्य, अहिंसा, करुणा, धैर्य और संयम जैसे मूल्य व्यक्ति को श्रेष्ठ मानव बनाते हैं। "कर्मण्येवाधिकारस्ते" का सिद्धांत हमें निःस्वार्थ भाव से कर्म करने, धैर्य रखने और अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

नितीश कुमार महली

डिप्लोमा (कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग), सेमेस्टर – I

भारतीय ज्ञान परंपरा ने मुझे यह सिखाया है कि सच्ची शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह व्यक्ति के चरित्र निर्माण और जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार होती है। यह परंपरा धर्म, कर्म और कर्तव्य के महत्व को समझाते हुए आत्मअनुशासन, सत्य. निष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व का मार्ग दिखाती है। इसके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय चिंतन आज के आधुनिक जीवन में भी उतना ही प्रासंगिक है। यह हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीना, मानवता के प्रति करुणा रखना और अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करना सिखाती है। एक छात्र के रूप में, इस ज्ञान ने मुझे जिम्मेदार और संस्कारयुक्त नागरिक बनने की प्रेरणा दी है।

अवनी मोहन साहू

बीसीए, सेमेस्टर – VI

एक मेडिकल छात्र के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा मुझे विज्ञान और संवेदना का सुंदर समन्वय प्रतीत होती है। यहाँ औषधि केवल रोग को दबाने का साधन नहीं, बल्कि शरीर की प्राकृतिक उपचार शक्ति को जागृत करने का माध्यम है। आयुर्वेद में औषधि का चयन रोगी की प्रकृति, दोष और जीवनशैली के अनुसार किया जाता है, जो आधुनिक व्यक्तिगत चिकित्सा की मूल भावना को दर्शाता है। जड़ी–बूटियों और प्राकृतिक स्रोतों का व्यवस्थित अध्ययन भारतीय चिकित्सा विज्ञान की वैज्ञानिक समझ को प्रमाणित करता है। औषध निर्माण में शुद्धता, सही मात्रा और नैतिकता पर बल दिया गया है। इस परंपरा में दवा निर्माण को सेवा माना गया है, न कि केवल व्यवसाय–यही दृष्टिकोण एक सच्चे फार्मासिस्ट की पहचान बनाता है।

हिमांशु गर्ग

बी. फार्मा, सेमेस्टर – VI

भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान और गणित का विशेष स्थान रहा है। प्राचीन भारतीय विद्वानों ने शून्य, दशमलव प्रणाली और गणना के वैज्ञानिक नियमों का विकास किया, जो आज के विज्ञान, तकनीक और कंप्यूटर प्रणाली की आधारशिला बने। आधुनिक युग में गणितीय और वैज्ञानिक सोच का उपयोग अंतरिक्ष अनुसंधान, इंजीनियरिंग और तकनीकी विकास में हो रहा है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा का वैज्ञानिक पक्ष आज भी हमारे दैनिक जीवन और वैश्विक प्रगति में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

मुस्कान श0

बी. फार्मा, सेमेस्टर – IV

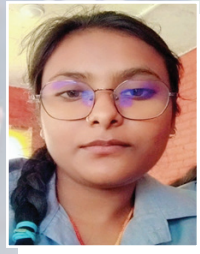

भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की प्राचीन, समृद्ध और विविध ज्ञान प्रणालियों का समन्वित स्वरूप है। इसमें वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा और वास्तुकला जैसे अनेक क्षेत्र सम्मिलित हैं। यह परंपरा आध्यात्मिक, दार्शनिक और व्यवहारिक ज्ञान को जोड़ते हुए नैतिक मूल्यों और समग्र विकास पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत इस ज्ञान परंपरा को पुनः शिक्षा व्यवस्था से जोड़ा जा रहा है। यह केवल भौतिक ज्ञान तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मबोध और आंतरिक विकास पर केंद्रित है। गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से ज्ञान का हस्तांतरण पीढ़ी दर पीढ़ी होता रहा है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

निकिता कुमारी

बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि, सेमेस्टर – VI

भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की सभ्यता की वह अमूल्य धरोहर है, जिसने मानव जीवन को ज्ञान, विवेक और नैतिकता की दिशा प्रदान की है। वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद और अर्थशास्त्र जैसी रचनाएँ इसकी गहराई और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। यह परंपरा जीवन को संतुलित, अनुशासित और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण बनाने का मार्ग दिखाती है। सत्य, अहिंसा, कर्तव्य और लोककल्याण जैसे मूल्य आज के युवाओं को आत्मचिंतन, नवाचार और राष्ट्रनिर्माण से जोड़ते हैं।

सृष्टि राज

बी.एस.सी. (ऑनर्स) कृषि

सामाजिक सहभागिता एवं प्रभाव

स्वास्थ्य एवं कल्याण शिविर का आयोजन

झारखंड राय विश्वविद्यालय, रांची में शिक्षण एवं गैर–शिक्षण कर्मचारियों के लिए आदित्य बिरला कैपिटल के सहयोग से स्वास्थ्य एवं कल्याण शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस पहल का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों में निवारक स्वास्थ्य देखभाल के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा नियमित स्वास्थ्य परीक्षण के महत्व को रेखांकित करना था।

शिविर में विश्वविद्यालय के कुल 96 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। इस दौरान प्रतिभागियों के लिए बॉडी मास इंडेक्स (BMI) परीक्षण एवं दंत परीक्षण जैसी आवश्यक स्वास्थ्य जाँच की गई। विशेषज्ञों द्वारा स्वास्थ्य संबंधी उपयोगी परामर्श भी दिया गया, जिससे कर्मचारियों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने की प्रेरणा मिली। यह स्वास्थ्य शिविर विश्वविद्यालय द्वारा कर्मचारियों के समग्र कल्याण एवं स्वस्थ कार्य वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में एक सराहनीय पहल सिद्ध हुआ।

सीबीएचडीपी के अंतर्गत ग्राम भ्रमण

सीबीएचडीपी (Character Building and holistic Development Program) पाठ्यक्रम के अंतर्गत एमसीए प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा ग्राम करकट्टा, नामकुम का शैक्षणिक एवं सामाजिक भ्रमण किया गया। इस भ्रमण का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय को विभिन्न सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक करना तथा स्थानीय नागरिकों के साथ प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करना था।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने ग्रामीणों के बीच जाकर योजनाओं की पहुँच एवं प्रभावशीलता को समझने के लिए एक सर्वेक्षण भी किया। इस सर्वेक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों ने यह जानने का प्रयास किया कि सरकारी योजनाएँ किस हद तक लाभार्थियों तक पहुँच रही हैं तथा किन क्षेत्रों में अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में सामाजिक सेवा के माध्यम से सार्थक योगदान दिया जा सके।

यह ग्राम भ्रमण विद्यार्थियों के लिए एक अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणादायी शिक्षण अनुभव सिद्ध हुआ, जिसने उनमें सामुदायिक सहभागिता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सेवा भावना को सुदृढ़ किया।

प्रकृति से जुड़ाव

परिसर में प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा एक वृक्ष का रोपण एवं उसका संरक्षण किए जाने की पहल पर्यावरणीय चेतना को व्यवहारिक रूप देने का सशक्त उदाहरण है। टैगिंग व्यवस्था के माध्यम से प्रत्येक वृक्ष को संबंधित विद्यार्थी से जोड़ा जाता है, जिससे उसमें स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। स्नातक होने के पश्चात उस वृक्ष की देखरेख की जिम्मेदारी नए विद्यार्थियों को सौंप दी जाती है, जिससे यह परंपरा सतत रूप से आगे बढ़ती रहती है। इस निरंतर वृक्षारोपण एवं संरक्षण प्रयास से विश्वविद्यालय परिसर का हरित आवरण उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है तथा विद्यार्थियों में दीर्घकालिक पर्यावरणीय उत्तरदायित्व, संवेदनशीलता और प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना सुदृढ़ हुई है।

रक्तदान शिविर

झारखंड राय विश्वविद्यालय परिसर में **04 दिसंबर 2025** को मेगा रक्तदान शिविर का आयोजन प्रबंधन क्लब, कौटिल्य ज्ञान केंद्र एवं राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) प्रकोष्ठ के संयुक्त प्रयास से किया गया। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. रश्मि के नेतृत्व में संपन्न हुआ। इस शिविर का उद्देश्य स्वैच्छिक रक्तदान के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और समाज में जीवनरक्षक सेवा की भावना को सुदृढ़ करना था।

RIMS ब्लड सेंटर, रांची के सहयोग से आयोजित इस शिविर में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कुल 183 यूनिट रक्त का संकलन किया गया, जिसमें 175 विद्यार्थी तथा 8 शिक्षक एवं कर्मचारी शामिल रहे। लगभग 50 प्रतिभागी पहली बार रक्तदान करने वाले थे, जो कार्यक्रम की व्यापक जागरूकता को दर्शाता है।

हमारी पहल

जल संरक्षण एवं नवीकरणीय संसाधन

परिसर में जल संरक्षण एवं नवीकरणीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग की दिशा में सतत प्रयास किए जा रहे हैं। परिसर

की छतों एवं विभिन्न खुले क्षेत्रों से प्राप्त वर्षा जल को वैज्ञानिक पद्धति से भूजल पुनर्भरण गड्ढों तथा भूमिगत टैंकों में संग्रहित किया जाता है। इस संग्रहित जल का उपयोग भूजल स्तर को बनाए रखने एवं बढ़ाने के साथ–साथ बाग. वानी, हरित क्षेत्र के विकास तथा कृषि संबंधी गतिविधियों में किया जाता है।

वर्तमान में परिसर में वर्षा जल संचयन की कुल क्षमता लग. भग 47,04,700 लीटर प्रति वर्ष है, जबकि प्रतिदिन औसतन लगभग 12,889.59 लीटर जल का पुनर्चक्रण किया जा रहा है। यह पहल पर्यावरण संरक्षण, जल प्रबंधन एवं सतत विकास के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

छात्रों द्वारा आत्मचिंतन डायरी लेखन : एक आदत

विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास और आत्मबोध को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में आत्मचिंतन डायरी लेखन की एक सार्थक पहल की गई है। इस पहल के अंतर्गत विद्यार्थियों को नियमित रूप से अपनी डायरी में दैनिक अनुभवों, विचारों, भावनाओं, सीख और भविष्य की आकांक्षाओं को लिखने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह अभ्यास उन्हें स्वयं के व्यवहार, निर्णयों एवं जीवन मूल्यों पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है।

आत्मचिंतन डायरी लेखन के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्लेषण की क्षमता, सकारात्मक दृष्टिकोण और भावनात्मक संतुलन विकसित होता है। यह प्रयास विश्वविद्यालय की उस शैक्षिक दृष्टि को दर्शाता है, जिसमें शिक्षा को केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर जीवन कौशल और चरित्र निर्माण से भी जोड़ा गया है।

विश्वविद्यालय कागज रहित कार्यप्रणाली की ओर

कागज के उपयोग को कम करने तथा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय द्वारा डिजिटल संचार व्यवस्था को प्राथमिकता दी गई है। इस पहल के अंतर्गत व्हाट्सएप, आउटलुक, ई–मेल, एसएमएस एवं विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट जैसे विभिन्न डिजिटल माध्यमों का नियमित एवं प्रभावी रूप से उपयोग किया जाता है। इन माध्यमों के द्वारा शैक्षणिक सूचनाएँ, प्रशासनिक निर्देश, नोटिस, कार्यक्रम संबंधी जानकारियाँ एवं अन्य आवश्यक संवाद समयबद्ध रूप से संबंधित हितधार. कों तक पहुँचाए जाते हैं। डिजिटल संचार के इस व्यापक उपयोग से कागज की खपत में उल्लेखनीय कमी आई है, जिससे न केवल प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हो रहा है, बल्कि कार्य प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, त्वरितता और दक्षता भी बढ़ी है। यह व्यवस्था विश्वविद्यालय में पर्यावरण–अनुकूल कार्यसंस्कृति को बढ़ावा देने के साथ–साथ सतत विकास के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है।

Programs Offered at Jharkhand Rai University

Department of Agriculture

B.Sc. *(Hons.)* Agriculture
Eligibility : 10+2 in Science from any recognised board.
Duration : 4 Years

M.Sc. (Ag.) Agronomy
Eligibility : B.Sc. (Agriculture) or equivalent from any recognised University.
Duration : 2 years

Department of Law

BA LLB
Eligibility : 10+2 from any recognised board.
Duration : 5 Years

LLB
Eligibility : Graduation from any recognised University.
Duration : 3 Years

LLM
Eligibility : LLB from any recognised University.
Duration : 1 Year

Department of Mining Engineering

B.Tech in Mining Engineering #
Eligibility : 10+2 in Science (PCM) from any recognised board.
Duration : 4 Years / 3 Years

Diploma in Mining Engineering #
Eligibility : 10th from any recognised board.
Duration : 3 Years / 2 Years

#Lateral Entry Available

Department of Commerce & Management

BBA
Eligibility : 10+2 from any recognised board.
Duration : 3 Years / 4 Years

MBA
Eligibility : Graduation or its equivalent from any recognised University.
Duration : 2 Years

B.Com *(Hons.)*
Eligibility : 10+2 from any recognised board.
Duration : 3 Years / 4 Years

Department of Pharmacy

Bachelor in Pharmacy (B.Pharm)#
Eligibility : 10+2 in Science from any recognised board.
Duration : 4 Years

Diploma in Pharmacy (D.Pharm)
Eligibility : 10+2 in Science from any recognised board.
Duration : 2 Years

#Lateral Entry Available

Department of Paramedical Sciences

B.Sc in Medical Lab Technology (B.Sc MLT)#
Eligibility : 10+2 in Science from any recognised board.
Duration : 3 Years / 4 Years

Bachelor of Radiology & Imaging Technology#
Eligibility : 10+2 in Science from any recognised board.
Duration : 3 Years / 4 Years

#Lateral Entry Available

Department of IT

BCA
Eligibility : 10+2 from any recognised board.
Duration : 3 Years / 4 Years

MCA
Eligibility : Graduation from any recognized University.
Duration : 2 years

Department of Computer Science Engineering

B.Tech in AI & ML
Eligibility : 10+2 in Science (PCM) from any recognised board.
Duration : 4 Years

B.Tech in Computer Science & Engineering #
Eligibility : 10+2 in Science (PCM) from any recognised board.
Duration : 4 Years / 3 Years

Diploma in Computer Science & Engineering #
Eligibility : 10th from any recognised board.
Duration : 3 Years / 2 Years

#Lateral Entry Available

Department of Physiotherapy

Bachelor of Physiotherapy (BPT)
Eligibility : 10+2 in Science (PCB) from any recognised board.
Duration : 4 Years 6 Months

www.jru.edu.in
1800 120 2546 (Toll Free)

facebook.com/jharkhandraiuniversity twitter.com/JhRaiUniv

झारखण्ड राय विश्वविद्यालय

राजा उलातू, नामकुम, राँची, झारखण्ड, पिनकोड - 834010